जब हमें पढ़ने से प्यार हुआ

– मीनाक्षी आर्य

चूंकि हम शिक्षक हैं, इसलिए स्वयं के पेशेवर विकास के लिए हमारा भी लगातार पढ़ते रहना जरूरी है। अपने सीखने की जिम्मेदारी हमें स्वयं लेनी होगी, इसके लिए सीखने का माहौल बनाना होगा।

इस कोरोनाकाल में जहां हम सभी चिंताओं में डूबे थे कि आगे पता नहीं क्या होगा! अनेक नकारात्मक विचार मन में उठते कि किस प्रकार हम इन परिस्थितियों का सामना करेंगे! कहीं हमें भी यह बीमारी तो नहीं हो जायेगी! बच्चों की पढ़ाई का क्या होगा, आदि–आदि।

इसी बीच एक सकारात्मक सोच के साथ आगाज हुआ हमारे "सृजन समूह" का। जिसने हमारे भीतर एक उम्मीद जगाई। कुछ नया और बेहतर करने की। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों के साथ कार्य करने का यह अनुभव मेरे लिए नया नहीं था, इससे पहले आरंभिक भाषा प्रोजेक्ट में 6 माह तक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन टीम के साथ कार्य करते हुए मैं एक सुखद अनुभव से गुजर चुकी हूं, तो मन में खुशी थी कि अब कुछ और अच्छा करने और सीखने को मिलेगा।

यह सिलसिला प्रारम्भ हुआ गंगा गुप्ता जी के आलेख "मैं शिक्षिका क्यों बनी" से, इस आलेख ने मुझे इतना प्रभावित किया कि उनके स्कूली जीवन और पेशेवर जीवन मुझे अपने से लगे। उन्होंने लिखा है, "उनके शिक्षक टोली बना कर पढ़ाई करवाते थे" वहीं से उनके भीतर शिक्षिका बनने की ललक पैदा हुई, और जब वे शिक्षिका बन गई, उन्होंने पहले परंपरागत तरीके से बच्चों को पढ़ाया, फिर एकलव्य संस्था के साथ कार्य करने से उनकी सोच में बदलाव आया और उन्होंने अलग–अलग विधियों से बच्चों को पढ़ाना शुरू किया, तो काफी सकारात्मक परिणाम देखने को मिले। इसी प्रकार मैं भी अपनी शिक्षिकाओं से प्रभावित होकर, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों से बहुत कुछ सीखते हुए, अपना शिक्षण कार्य कर रही हूं। इस आलेख के बाद भी हमने कई आलेख जो शिक्षकों के अनुभवों और डायरी के रूप में हमें पढ़ने को मिले, इन आलेखों से प्रभावित होकर मैंने भी एक आलेख लिखा, जिसका शीर्षक था, "जीवन में मेरे शिक्षकों की भूमिका"।

फोटोः पुरूषोत्तम ठाकुर

मैंने विगत 6 माह से इस समूह से जुड़कर एक शिक्षक के रूप में पढ़ने–लिखने के प्रति अपना एक नजरिया बनाने का प्रयास किया है। लेखन की विभिन्न विधाओं से परिचित होना मेरे लिए एक नया अनुभव रहा है। क्योंकि एक विज्ञान विषय की शिक्षार्थी रहते हुए, मैंने कभी भी हिंदी भाषा को इतनी गहराई से सोचने और समझने की कोशिश नहीं की थी। लेकिन इस समूह से जुड़ने और 6 माह से लगातार पढ़ने और लिखने से मेरा रुझान हिंदी भाषा की तरफ बढ़ने लगा है। इस बीच मैंने अनुभव किया है कि किस प्रकार हिंदी भाषा का समावेश हमारे सभी विषयों में है।

मेरा यह मानना है कि चूंकि हम एक शिक्षक हैं, इसलिए स्वयं के पेशेवर विकास के लिए पढ़ना एक आवश्यक क्रिया के अंतर्गत होना चाहिए। "एक बार टीकॉन में "शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा नही" शिवरतन थानवी जी के आलेख पर चर्चा के दौरान कमलेश जोशी जी ने बताया कि– अभी तक हमारे भीतर पढ़ने की आदत विकसित क्यों नहीं हो पाई, क्योंकि हमने जो भी पढ़ा उसे केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने की दृष्टि से पढ़ा। हमारी

स्कूलिंग में पढ़ने लिखने की बात नहीं की गई। साथ ही हिंदी भाषी क्षेत्रों में पढ़ने–लिखने का कल्चर नहीं है। यह हमे स्वयं ही बनना होगा। यह एक लंबी प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। अपने सीखने की जिम्मेदारी हमें स्वयं लेनी होगी, इसके लिए सीखने का माहौल बनाना होगा।

इन विषम परिस्थितियों के बावजूद अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन टीम ने इस कल्चर को बनाने का खूबसूरत प्रयास किया है। मुझे खुशी है कि मैं भी इसका एक हिस्सा हूं। अब यह कार्य हमारी दिनचर्या में शामिल हो गया है। प्रतिदिन नई विधा से परिचित होना, पढ़ना, सोचना, समझ और लिखित रूप में अपनी अभिव्यक्ति देना । पिछले दो माह से विभागीय कार्यों की व्यस्तता और ऑनलाइन शिक्षण को ध्यान में रखते हुए अब सप्ताह में तीन आलेख साझा होते और उन पर हम सभी अपने विचार रखते।

6 माह में सौ से भी अधिक आलेख और आधुनिक कविताओं को पढ़ने और समझने का आनंद हमने उठाया है। समूह से जुड़ कर और लगातार पढ़ते हुए एक शिक्षक के रूप में पढ़ने की आवश्यकता को कुछ हद तक समझ पाई हूं कि क्यों हमारे लिए पढ़ना जरूरी है।

शिवरतन धानवी जी ने अपने आलेख "शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा नहीं" में इस मुद्दे पर गहराई से बात की है तथा एक शिक्षक के लिए पढ़ने के महत्व को बताया है। एक शिक्षक की जिम्मेदारी बहुत बड़ी है वह अपने कार्यों से अपने विचारों से समाज में बदलाव ला सकता है। विचारों में बदलाव स्वाध्याय के द्वारा ही संभव है, तो हमें स्वाध्याय की आदत तो डालनी ही होगी।

सबसे बड़ी बात यह कि बच्चे हमें देखकर भी सीखते हैं और हमें (शिक्षक को) अपना रोल मॉडल भी मानते हैं। अधिकतर बच्चों को यह कहते सुना जाता है " यह हमारी मैम ने कहा है तो सही है" शिक्षक की कही बात उनके लिए पत्थर की लकीर के समान होती है, अपने शिक्षक की नकल करना, उनके खेलों में शामिल होता है।शिक्षक का व्यवहार, आचरण, बातें, उठने बैठने का तरीका सभी कुछ बच्चे को प्रभावित करता है। हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम उनके सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करें, हमे पढ़ता देखकर बच्चे भी पढ़ना सीखेगे।

छः माह से लगातार विविध विधाओं से परिचित होने के बाद यह कह पाना आसान न होगा कि कौन से आलेख मुझे पसंद आये। पढ़ने के लिए कौन सी सामग्री उचित होगी यह बड़ा प्रश्न है लेकिन यहां पर हमारे लिए सामग्री का चुनाव फाउंडेशन के साथियों ने किया।

सामग्री इतनी रुचिकर होती कि स्वतः ही पढ़ने का एक माहौल बनता गया। शिक्षकों के अनुभवों को पढ़कर मैंने जाना कि किस प्रकार हम अपनी शिक्षण विधियों पर विचार करें, कैसे बच्चों को समझे, परिस्थितियों के विपरीत होने पर भी किस प्रकार कार्य किया जाए। आलेख "टी.एल.एम. बनाम टीचिंग एड" को पढ़कर समझा कि जिन टी.एल.एम. की बात हम करते हैं असल में हमने उन्हें केवल टीचिंग एड की ही तरहः इस्तेमाल किया है, हमें बच्चों के लिए ऐसी सामग्री खोजनी होगी जिससे बच्चे स्वतः जुड़ना चाहें। सामग्री का उपयोग केवल एक माध्यम है जब तक लक्ष्य स्पष्ट नहीं हो जाता तब तक सामग्री का कोई महत्व नहीं है। इसी प्रकार "फेल न किया तो क्या किया" आलेख को पढ़कर समझ में आया कि जिन मासूम बच्चों को फेल करने की बात हम करते हैं असल में फेल बच्चा नहीं होता शिक्षक होता है। आलेख "एक अच्छे शिक्षक के मायने क्या हैं" हमें आत्मचिंतन को विवश करता है, यह बताता है कि समाज के निर्माण में शिक्षक की भूमिका अहम होती है। अरविंद गुप्ता जी द्वारा लिखा आलेख" एक उत्साही शिक्षिका की डायरी" को पढ़कर जाना कि महंगी इमारतों और सारी सुविधाओं से स्कूल अच्छे नहीं बनते बल्कि उसके लिए शिक्षक का रोल महत्वपूर्ण है। इस प्रकार विभिन्न आलेख "क्या शिक्षक एक पेशेवर है," "विद्यार्थियों में मूल्यों का बीजारोपण", " सवा छोटा चौथाई बड़ा", "शब्दों से पहले चित्र आते हैं", "लोग और उनके सोचने समझने के तरीके" "वे स्कूल क्यो आते हैं", "अच्छे सवाल कैसे पूछें", आदि कुछ आलेख ऐसे हैं जिन्होंने मुझे सोचने पर विवश किया कि एक शिक्षक को कितनी गहराई से समझने की जरूरत है। सरल शब्दों में कहा जाए तो इन आलेखों को पढ़कर मुझे स्वमूल्यांकन का अवसर मिला है। कमल महेन्दू द्वारा लिखा आलेख "अच्छे शिक्षक के मायने" ने मुझे स्वयं के भीतर झांकने का अवसर दिया।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, महराया, रुद्रपुर, ऊधमसिंह नगर में सहायक अध्यापिका हैं)